IJAER/ May-June 2023/Volume-12/Issue-3 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

^^अभिवृति का अर्थ परिभाषा सिद्धांत एवं विशेषताओं का अध्ययन**

Suman Yadav
Research Scholar Singhania University, Pacheri Bari (Jhunjhunu) Raj.

Dr. Sunita Yadav
Supervisor Professor Singhania University, Pacheri Bari (Jhunjhunu) Raj.

➢ भूमिका –

मानव व्यवहार का अध्ययन करने के लिए उसकी अभिवृत्तियों का पता लगाना नितान्त आवश्यक है। अभिवृतियाँ ही व्यक्ति के मानसिक व सामाजिक व्यवहारों का दिशा प्रदान करती हैं। किसी विचार, वस्तु, प्राणी या घटना के प्रति जैसी अभिवृत्ति होगी व्यक्ति उसके प्रति वैसा ही व्यवहार करेगा। वास्तव में अभिवृत्ति ऐसी मानसिक प्रक्रिया है। जिसका सम्बन्ध सामाजिक परिस्थितियों से होता है। इसलिए शिक्षा मनोविज्ञान में अभिवृत्ति के अध्ययन का महत्व दिन–प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है।

➢ अभिवृत्ति की अवधारणा –

व्यक्ति का व्यवहार दो प्रकार का होता है। प्रकट और अप्रकट। जिस व्यवहार का निरीक्षण करते हैं, उसे प्रकट या ब्राह्य व्यवहार कहते हैं। किन्तु वह व्यवहार जिसका अवलोकन या निरीक्षण व्यक्ति प्रत्यक्ष रूप से नहीं कर सकता है, उसे अप्रकट या आन्तरिक व्यवहार कहते हैं। यद्यपि प्रकट या बाह्यं व्यवहार में बाह्य आडम्बरों एवं कृत्रिमता के समावेष की सम्भावना हो्ी है। किन्तु अप्रकट या आन्तरिक व्यवहार में ऐसे लक्षणों की सम्भावना कम होती है। अतः यह कहना अनुचित न होगा कि अप्रकट व्यवहार के अध्ययन के द्वारा किसी व्यक्ति को समझना अधिक सुगम एवं समीचीन प्रतीत होता है। इसी कारण मनोविज्ञान में बाह्य व्यवहार के साथ–साथ आन्तरिक व्यवहार के अध्ययन को भी महत्व दिया गया है। इन्हीं

अप्रकट अथवा आन्तरिक व्यवहारों से व्यक्ति की अभिवृत्तियों, मूल्यों तथा विश्वासों का बोध होता है।

➢ अभिवृत्ति की अर्थ –

जजपजनकम अभिवृत्ति की उत्पति ।चलने नामक शब्द से हुई जो लैटिन भाषा का षब्द है। इसका अर्थ सुविधा या योग्यता से लगाया जाता है। अभिवृत्ति एक काल्पनिक प्रत्यय है। क्योंकि इसका प्रत्यक्ष बोध संभव नहीं है। हाँ, अभिवृत्ति के प्रभावों का अनुभव किया जा सकता है या इसका अनुमान व्यक्ति के व्यवहार या क्रियाओं द्वारा किया जा सकता है। सामाजिक व्यवहारों के प्रकाशन एंव निर्धारण में अभिवृत्तियाँ प्रमुख मानी जाती हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर ।ससचवतज, 1935द्ध ने अपने एक लेख में अभिवृत्तियों को समाज मनोविज्ञान की केन्द्रीय समस्या बताया है।

➢ अभिवृत्ति की परिभाषाएँ –

जेम्स ड्रेवर – ''अभिवृत्ति से अभिप्राय है व्यक्ति की सम्मति, अभिरूचि या उद्वेश्य का वह स्थायी विन्यास अथवा स्वभाव या स्ववृति जिसमें किसी प्रकार के अनुभव तथा समुचित अनुक्रिया हेतु तत्परता की प्रत्याशा अन्तर्निहित हो।''

थर्स्टन के अनुसार– ''अभिवृत्ति किसी मनोवैज्ञानिक वस्तु से सम्बद्ध धनात्मक या ऋणात्मक प्रभाव की मात्रा है।''

रमर्स, रूमेल व गेज – ''अभिवृत्ति अनुभवों के माध्यम से संगठित वह संवेगात्मक प्रवृति है। जो नकारात्मक या सकारात्मक रूप से किसी मनोवैज्ञानिक पदार्थ के प्रति प्रतिक्रिया करती है।

फ्रीमैन – ''अभिवृत्ति किन्हीं निश्चित परिस्थितियों, व्यक्तियों एवं वस्तुओं के प्रति सतत् रूप से अनुक्रिया करने की वह स्वाभाविक तत्पराता हे जिसे अर्जित किया जाता है। तथा वह अनुक्रिया करने का एक निश्चित स्वरूप बन जाता है।

वुडवर्थ– ''अभिवृत्तियाँ मत, रूचि या उद्धेश्य की थोड़ी बहुत स्थायी प्रवृतियाँ हैं, जिनमें किसी प्रकार के पूर्व–ज्ञान की प्रत्याशा और उचित प्रक्रिया की तत्परता निहित है।''

ब्रिट – अभिवृत्ति नाड़ी संबंधी तथा मानसिक तत्परता की अवस्था है। जो व्यक्ति से संबंधित सभी वस्तुओं तथा परिस्थितियों के प्रति प्रतिक्रिया पर निर्देशात्मक अथवा गत्यात्मक प्रभाव डालती है।''

आलपोटर– ''अभिवृत्ति सभी सम्बद्ध वस्तुओं एंव परिस्थितियों के प्रति व्यक्ति पर गतिक प्रभाव डालने वाली मानसिक एवं स्नायविक तत्परता है।''

अभिवृत्ति की उपरोक्त परिभाषाओं से यह स्पष्ट है कि अभिवृत्ति जन्मजात नहीं, वरन एक अर्जित प्रवृत्ति है, साथ ही साथ यह अभिवृत्ति के विभिन्न घटकों की ओर संकेत करती है। अभिवृत्ति में संज्ञानात्मक, भावात्मक और क्रियात्मक पक्ष न केवल एक–दूसरे से संबंधित ही होते हैं वरन् एक–दूसरे पर आश्रित भी होते है।

➢ **अभिवृत्ति के आयाम –**

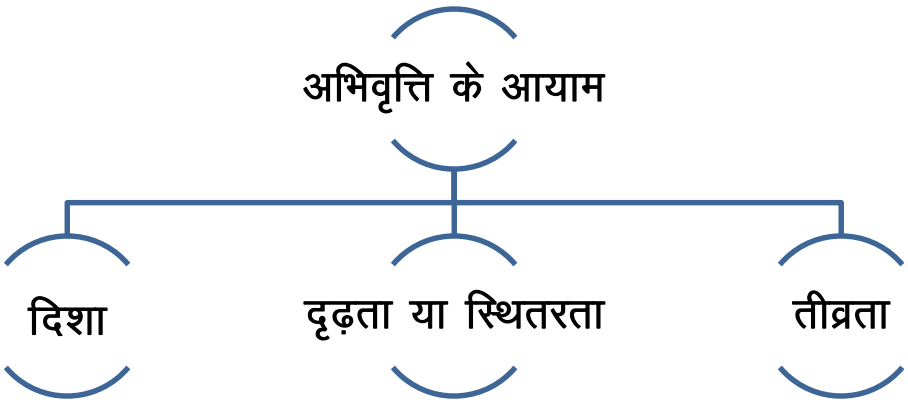

(1) दिशा – अभिवृत्ति की प्रायः दो प्रमुख दिशाएँ होती हैं– (1) सकारात्मक तथा (2) नकारात्मक। इसका अभिप्राय है कि कोई व्यक्ति अपनी अभिवृत्ति किसी वस्तु, व्यक्ति, घटना या विचार के प्रति अपनी अनुक्रिया अनुकूल व्यक्त करता है अथवा प्रतिकूल भी अर्थात् वह पक्ष या विपक्ष की दिशा में होती है।

(2) दृढ़ता या स्थितरता – अभिवृत्ति में अनतर्निहित तीव्र संवेगों के कारण अपेक्षाकृत अधिक दृढ़ या स्थिर होती है, किन्तु यदि अन्तर्निहित संवेगों की तीव्रता कम है तो अभिवृत्ति की दृढ़ता अपेक्षाकृत कम होगी। संवेगों की मात्रा के अनुसार अभिवृत्ति कम या अधिक वेग से अभिव्यक्त होती है तथा संवेगों के परिवर्तन के साथ अभिवृत्ति भी परिवर्तित हो जाती है।

(3) तीव्रता – जिस प्रकार संवेगों की मात्रा पर अभिवृत्तियों का स्थायित्व निर्भर होता है। उसी प्रकार संवेगों की तीव्रता तथा मंदिता के आधार पर अभिवृत्तियों की तीव्रता भी आधारित है।

उदाहरण द्वारा इन आयामों को समझा जा सकता है। जैसे कोई सद्चरित्र व्यक्ति दुराचरण या दुराचारी व्यक्ति या अश्लील दृश्य या वस्तु के प्रति उससे घृणा व प्रतिरोध करने की अभिवृत्ति अभिव्यक्त करता है जो दुराचार के प्रति नकारात्मक दिषा में होती हे तथा इस प्रवृति की स्थिरता व तीव्रता की मात्रा उस सद्चरित्र व्यक्ति की अभिवृत्ति में अन्तर्निहित नैतिक संवेगों की मात्रा पर निर्भर होता है। सकारात्मक दिशा में एक सद्चरित्र व्यक्ति की नैतिक कार्यों के प्रति निष्ठा की अभिवृत्ति प्रकट होगी तथा उसकी मात्रा भी उससे जुड़े संवेगों पर निर्भर होगी।

➢ अभिवृत्ति की विशेषताएँ –

1. अभिवृत्ति में दिशात्मकता पाई जाती है। इसका स्वरूप विधेयात्मक भी हो सकता है और निषेधात्मक भी। शून्य अभिवृत्तियाँ उसरी समय पाई जाती हैं, जब व्यक्ति को वस्तु या उद्धीपक के बारे में ज्ञान नहीं होता है।
2. अभिवृत्ति का मात्रात्मक मापन संभव है जिससे हम व्यक्ति या वस्तु के प्रति व्यक्ति की अभिवृत्ति में पाये जाने वाली अनुकूलता अथवा प्रतिकूलता का मापन कर सकते है।
3. अभिवृत्ति की प्रकृति में स्थायित्व पाया जाता है।
4. यह परविर्तनशील होती है।
5. यह (अभिवृत्ति) किसी वस्तु या व्यक्ति के प्रति उसके स्वाभाविक तत्परता की ओर संकेत करता है।
6. अभिवृत्ति का सम्बन्ध भाव एवं संवेग से भी रहता है।
7. अभिवृत्ति का आधार व्यक्ति का पूर्व अनुभव है।
8. अभिवृत्ति एक मानसिक झुकाव है जिसका सम्बन्ध किसी घटना, वस्तु, आदर्श, संस्था आदि से होता है।
9. अभिवृत्तियाँ अर्जित होती है। जन्मजात नहीं।
10. यह प्रेरणात्मक, संवेगात्मक एवं ज्ञानात्मक होती है।
11. यह अभियोजन बोधक होती है।
12. इस पर देश काल संस्कृति एवं परिस्थिति आदि कारकों का प्रभाव पड़ता है।

13. अभिवृत्ति से किसी घटना, व्यक्ति, वस्तु आदि के प्रति व्यक्ति के पक्ष–विपक्ष अथवा विधेयात्मक–निषेधात्मक दृष्टिकोण के बारे में ज्ञान प्राप्त होता है।
14. अभिवृत्ति एक सक्रिय एवं गतिशील मानसिक झुकाव है।
15. यद्यपि अभिवृत्तियाँ स्थासी होती है तथापि इनका स्वरूप परिवर्तित भी हो सकता है।
16. अभिवृत्तियों के मूल में संवेग अन्तर्निहित होते है।
17. सामाजिक संबंधों के आधार पर ही प्रायः अभिवृतियाँ विकसित होती है।
18. अभिवृत्ति व्यक्ति की स्वाभाविक अनुक्रिया होती है।
19. अभिवृत्ति सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों प्रकार की होती है।
20. विभिन्न संस्कृतियों के व्यक्तियों की अभिवृत्तियाँ अलग–अलग होती है।

➢ **अभिवृत्ति को प्रभावित करने वाले कारक –**

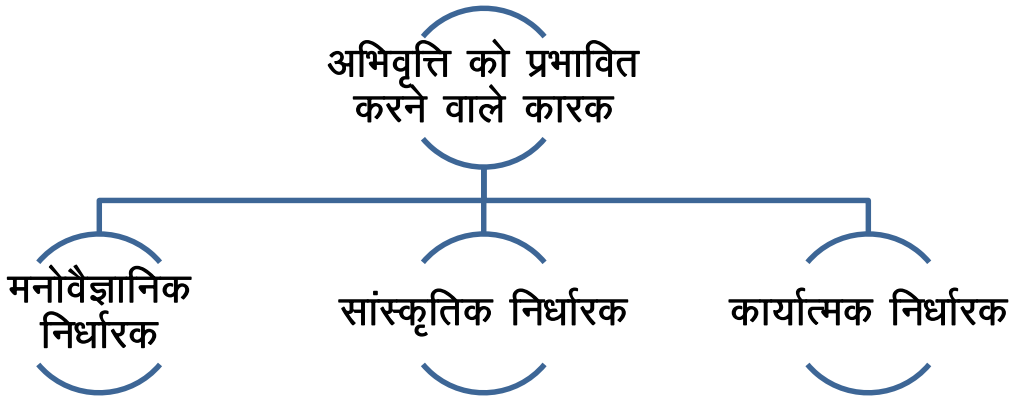

1. **मनोवैज्ञानिक निर्धारक –** तनाव, आवश्यकताएँ संवेगात्मक, अनुभव प्रत्यक्षीकरण आदि अभिवृतियों को प्रभावित करते हैं। उदाहरण किसी देश या स्थान से दूसरे देश या स्थान में जाने वाले शरणार्थियों की अभिवृत्ति काफी सीमा तक उनकी मानवीय एवं भौतिक हानि द्वारा निर्धारित होती है।
2. **सांस्कृतिक निर्धारक –** अभिवृत्ति के निर्माण में सांस्कृतिक कारक महत्वपूर्ण हैं। व्यक्ति समूह में रहता है। समूह के विश्वास, मूल्य प्रभाव उसकी अभिवृत्तियों का र्मिाण करते हैं। इस सम्बन्ध में कुछ अध्ययन हुए हैं। कार्लसन के अनुसार यहूदी एवं विद्यालयों के पूर्व–स्नातक विद्यार्थी ईश्वर एवं जन्म नियंत्रण के प्रति उदार होते हैं। प्रोटेस्टैन्ट अपेक्षाकृत कम उदार होते है। विशिष्ट शिक्षा–संस्थानों में पढ़ने वाले कैथोलिक फासिज्म में विश्वास रखते है।
3. **कार्यात्मक निर्धारक –** इस संबंध में व्यक्ति के स्वभाव की चर्चा करना उपयुक्त है। इससे काफी सीमा मत वस्तुओं एवं व्यक्तियों तथा परिस्थितियों के प्रति व्यक्ति की अभिवृत्तियों का निर्धारण होता है। अभिवृत्ति के कारकों, पश्चात अभिवृत्ति कथनों की अनौपचारिक कैसोटियाँ निम्न है।

➢ **अभिवृत्तियों कथनों की अनौपचारिक कसौटियाँ –**

थर्स्टन और चैव (1929) लिकर्ट (1932) वेष (1932) बर्ड (1940) और एडवर्ड तथा किलपैट्रिक (1948) आदि विद्वानों ने अभिवृत्ति मापनियों को तैयार करने में प्रयोग किये जाने वाले कथनों के लिए अनौपचारिक कसौटियों का उल्लेख किया है। आप लोगों के सुझाव इस प्रकार है–

1. ऐसे कथनों को विलगित कर देना चाहिए, जो वर्तमान की अपेक्षा भूतकाल के संबंध में इंगित करता है।
2. तथ्यात्मकता कथनों को या ऐसे कथनों को, जिनकी व्याख्या तथ्यात्मक रूप से की जा सके, मापनी में नहीं रखना चाहिए।
3. ऐसे कथनों को, जिनकी व्याख्या अनेक प्रकार से की जा सके, मापनी में नहीं रखना चाहिए।
4. ऐसे कथनों को उपेक्षित करना चाहिए, जो मनोवैज्ञानिक उद्धेश्य के लिए उपयुक्त न हों।
5. ऐसे कथनों का प्रयोग नहीं करना चाहिए, जो हर व्यक्ति को मान्य हों अथवा किसी व्यक्ति को मान्य हों।
6. ऐसे कथनों का चयन करना चाहिए, जिनके सम्बन्ध में यह विश्वास किया जा सके कि वह रूचि की प्रभावकारी मापनी के सम्पूर्ण क्षेत्र से संबंधित है।
7. कथनों की भाषा प्रत्यक्ष सरल और स्पष्ट होनी चाहिए
8. कथन छोटे होने चाहिए तथा जहाँ तक सम्भव हो सके, 20 शब्दों से अधिक के नहीं होने चाहिए।
9. हर कथन में केवल एक पूर्ण विचार होना चाहिए।
10. केवल, कदाचित, सिर्फ तथा इसी प्राकर के अन्य शब्दों को बड़ी सावधानी के साथ प्रयोग करना चाहिए।
11. ऐसे कथन जिनमें सार्वभौमिकता को इंगित करने वाले शब्द जैसे 'सदैव', 'सब', 'कोई नहीं', और 'कभी नहीं', आदि का प्रयोग जहाँ तक हो सके, नहीं करना चाहिए, क्योंकि ऐसे शब्दों से अनेकार्थकता उत्पन्न होती है।
12. जहाँ तक सम्भव हो सके, कथन क्लिष्ट वाक्यों की अपेक्षा सरल वाक्यों में होने चाहिए।
13. ऐसे शब्दों का उपेक्षित करना चाहिए जा उन व्यक्तियों द्वारा न समझे जा सकें जिन पर तैयार मापनी प्रशासित करनी है।
14. दोहरे ऋणात्मक शब्दों के प्रयोग से बचना चाहिए।

➢ **अभिवृत्ति मानी र्मिाण की विधियाँ –**

अभिवृत्ति का मापन सामाजिक अध्ययनों एवं व्यक्तित्व अध्ययनों के लिए अति आवश्यक और महत्वपूर्ण है। अभिवृत्तियाँ अनेक प्रश्नों से जुड़ी हो सकती है। अतः इनसे संबंधित प्रमापीकृत मापनियों का मिलना उतना सरल नहीं है। प्रायः अनुसन्धानकर्ता को अपने उद्धेश्य के अनुकूल स्वयं की ही मापनी का विकास करना पड़ता है। अभिवृत्तियों की मापनी के निर्माण हेतु कुछ प्रचलित विधियाँ हैं, जो निम्नलिखित हैं–

व्यावहारिक विधियाँ	मनोवैज्ञानिक विधियाँ
1. प्रत्यक्ष प्रश्न विधि	1 थर्स्टन युग्म तुलनात्मक विधि
2. व्यवहार का प्रत्यक्ष अवलोकन	2 थर्स्टन व चैव की समाभासी मध्यान्तर विधि
	3 लिकर्ट योग निर्धारण विधि
	4 गटमैन स्केलोग्राम विश्लेषण विधि
	5 सफीर क्रमबद्ध अन्तर विधि
	6 एडवर्ड तथा किलपैट्रिक की विभेदकारिता विधि
	7 सिमेन्टिक डिफरेन्शियल स्केल

व्यावहारिक विधियाँ –

(1) प्रत्यक्ष प्रश्न विधि – इसमें व्यक्ति से किसी वस्तु व्यक्ति तथा धर्म आदि के संबंध में उसके विचार एवं अभिवृत्ति जानने हेतु प्रश्न पूछे जाते है। यह विधि अधिक वैज्ञानिक विधि नहीं है, इसकी मुख्यतः दो सीमाएँ हैं– (1) इसमें कथनों के वास्तविक अन्तर नहीं मिल पाते हैं। उदाहरणार्थ– मील मालिक मील की व्यवस्था के प्रति कभी भी प्रतिकूल अभिवृत्ति नहीं दर्शाता है। क्योंकि ऐसा करने पर उसे नौकरी चले जाने का या उन्नति के रूक जाने का भय बना रहता है। (2) विचार परिवर्तनशीलता के कारण इसकी विश्वसनीयता बहुत कम होती है। इस विधि में कम समय कम खर्च में ही व्यक्ति की अभिवृत्ति का पता लगा सकते हैं।

(2) व्यवहार की प्रत्यक्ष अवलोकन विधि – इस विधि में व्यक्ति के व्यवहार का प्रत्यक्ष अवलोकन करके उसकी अभिवृक्रिा का पता लगाया जाता है। यह विधि प्रथम विधि की अपेक्षा अधिक उपयुक्त है, क्योंकि इसमें निरीक्षित व्यक्ति को नीक्षण का ज्ञन नहीं होता है। साथ ही उसका व्यवहार प्राकृतिक रूप से उसकी अभिवृत्ति के अनुकूल होता है। उदाहरणार्थ यदि कोई व्यक्ति किसी विशेष जाति के व्यक्ति के यहाँ भोजन नहीं करता, उसको स्पर्श नहीं करता या उसकी बराबर वाली कुर्सी पर नहीं बैठता तो इसका अर्थ है कि वह उस जाति विशेष के प्रति प्रतिकूल अभिवृत्ति रखता है। इस विधि की कठिनाई यह है कि अधिक व्यक्तियों की अभिवृत्ति मापन करने में समय बहुत अधिक लगता है। और कई बार व्यक्ति प्रायः सामाजिक परिस्थितियों में अपनी वास्तविक अभिवृत्ति को छिपा जाता है।

मनोवैज्ञानिक विधियाँ –

1. **थर्स्टन की युग्म तुलना विधि**– थर्स्टन ने 1927 में सर्वप्रथम अपने ''तुलना निर्णय नियम'' का प्रतिपादन किया। अभिवृत्ति मापन हेतु विकसित युग्म तुलना विधि का विकास इस नियम के आधार पर ही हुआ। इस विधि में अनुसन्धानकर्ता दो कथनों के जोड़ों को उत्तरदाता के समक्ष प्रस्तुत करता है। अनुसन्धानकर्ता उत्तरदाता से उन दोनों कथनों में से किसी एक के प्रति अपनी सहमति अथवा असहमति प्रकट करने के लिए कहता है। उत्तरदाता दोनों कथनों के प्रति निर्णय को प्रकट करता है। इस विधि में प्रत्येक कथन को अन्य कथनों का जोड़ा बनाकर उसकी तुलना की जाती है।
2. **थर्स्टन एवं चैव की समाभासी मध्यान्तर विधि**– इस विधि का विकास थर्स्टन तथा चैव ने 1929 में किया। इस विधि का प्रयोग उस समय किया जाता है, जब कथनों की संख्या अधिक होती है। इसमें 11 श्रेणियाँ होती हैं तथा ये निम्न प्रकार से मापनी पर अंकित की जाती हैं–

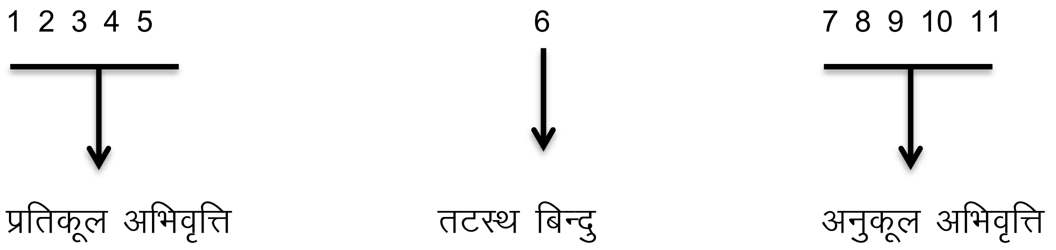

इस प्रकार इस अभिवृत्ति मापनी में व्यक्ति की किसी वस्तु, व्यक्ति आदि के संबंध में अनुकूल एवं प्रतिकूल अभिवृत्ति को विभिन्न मात्राओं में ज्ञात किया जाता है। इस मापनी में । का तात्पर्य अति प्रतिकूल ज्ञ का तात्पर्य अति अनुकूल तथा 6 का तात्पर्य तटस्थ से है।

3. **गटमैन स्केलोग्राम विश्लेषण विधि** – इस विधि का प्रतिपादन गटमैन ने किया। इस विधि में सर्वप्रथम अभिवृत्ति के विषय–वस्तु क्षेत्र की व्याख्या करके उस विषय वस्तु से संबंधित कथनों का चयन किया जाता है। कथनों के चयन में पद विश्लेषण विधि प्रयुक्त होती है।

   प्रत्येक कथन में दो विकल्प रहते हैं– (1) सहमत (2) असहमत। सहमत प्रत्युत्तर पर 1 अंक तथा असहमत प्रत्युत्तर पर 0 अंक प्रदान किया जाता है। अन्त में समस्त कथनों के अंकों को जोड़कर कुल अभिवृत्ति अंक ज्ञात किये जाते हैं।

4. **सफी क्रमबद्ध–अन्तर विधि–** इस विधि का विकास सन् 1937 में थर्स्टन ने किया किन्तु इसका व्यापक प्रयोग तथा प्रचार सफीर ने किया। इसलिए यह विधि सामान्यता सफीर के नाम से ही जानी जाती है। इसे ''समान विभेदकारिता शक्ति मापनी'' एवं ''एबसोल्यूट स्केल'' भी कहते हैं। यह विधि थर्स्टन एवं चैव की विधि का ही एक संशोधन है। इस विधि में कथन अधिक मात्रा में होते हैं तथा कथनों को क्रमबद्ध अन्तर से मापा जाता है। प्रत्येक कथन का आवृत्ति विवरण यह बताता है कि कथनों की कितनी पुनरावृत्ति हुई है। आवृत्ति ज्ञात करने पर उन्हे बाँयी से दाँयी ओर संचय कर संचयी आवृतियाँ ज्ञात करते हैं और निर्णायकों की संख्या से भाग देकर संचयी अनुपात मालूम कर लेते हैं।

5. **एडवर्ड तथ किलपैट्रिक की विभेदकारिता विधि–** इस विधि का सन् 1948 में एडवर्डस् तथा किलपैट्रिक ने प्रतिपादन किया। यह विधि कोई मौलिक विधि नहीं है वरन् इस विधि के विकास में अभिवृत्ति मापनी की समस्त विधियों की विशेषताओं को सम्मिलित करने का प्रयास किया है। अन्य विधियों की विशेषताओं के रूप में इन्होने थर्स्टन के समाभासी विधि तथा सफीर के क्रमबद्ध अन्तर विधि की विशेषताओं को सम्मिलित किया है।

6. **सिमेन्टिक डिफरेन्शियल स्केल–** इस विधि का 1952 में ओसगुड ने सर्वप्रथम प्रयोग किया। इस स्केल के अनुसार एक ही मनोवैज्ञानिक पदार्थ के प्रति विभिन्न व्यक्तियों की विभिन्न धारणा होती है। धारणा में विभिन्नता व्यक्तिगत विभिन्नताओं के कारण होती है। इस मान्यता को ही लेकर ओसगुड ने अनेक कथन बनाए जिनमें वर्णन तथा निर्णय को एक निर्धारण–मान पर प्रदर्षित किया गया था। इसे निर्धारण मान कर ही परीक्षार्थी को अपना दृष्टिकोण अंकित करना होता है। प्रत्येक निर्धारण मान के सात स्थान होत है।

विधालय

1. अच्छा..... बुरा
2. पास ..... दूर

पिता

पंक्ति 1. अच्छा.....बुरा

पंक्ति 2. सच्चरित्र.....दुश्चरित्र

पंक्ति 3. दयालु.....निर्दयी

इसी प्रकार 80 शब्दों के साथ भी इस तरह के दो विपरीत भावबोधक शब्द दिए होते है ये 80 शब्द सभी संज्ञाएँ थी। जिनके लिए प्रायः सभी प्रकार के विशेषण प्रयोग किये गए हैं। प्रत्येक पंक्ति 7 खण्डो़ में विभक्त है और प्रत्येक खण्ड को 1,2,3,4,5,6,7 अंक देते है। फिर समस्त अंको को जोड़कर अभिवृत्ति अंक ज्ञात कर लेते है।

7. **लिकर्ट योग निर्धारण विधि–** इस विधि का विकास लिकर्ट द्वारा 1932 में किया गया। इसे लिकर्ट की संकलित निर्धारण विधि कहते हैं। लिकर्ट ने देखा कि थर्स्टन एवं चैव की समान उपस्थिति अन्तराल विधि में समय एवं श्रम बहुत अधिक लगता है। उसके लिए पूर्ण प्रशिक्षित व्यक्तियों की आवश्यकता होती है तथा यह पद्धति काफी क्लिष्ट है जो लिकर्ट ने उसी के समान एक सरल विधि का निर्माण किया। इस विधि को बिना निर्णायकों के समूह के ही प्रयोग में लाने पर थर्स्टर्न के समान ही अंक प्राप्त हुए हैं। दोनों में सहसम्बन्ध 92 प्राप्त किया गया। इसके बनाने में कम समय लगता है तथा प्रयोग भी आसान होता है।

इसके बनाने में सर्वप्रथम किसी विषय के सम्बन्ध में अनेक कथन एकत्रित करते हैं। कथन का उचित होना महत्वपूर्ण नहीं है बल्कि महत्वपूर्ण यह है ि कवे किसी विशेष दृष्टिकोण के लिए निश्चित रूप से अनुकूल अथवा प्रतिकूल हों। प्रतिकूल तथा अनुकूल कथन लगभग समान होने चाहिए।

इन कथनों का संग्रह करने के पश्चात् इनको कुछ व्यक्तियों पर पूर्व परीक्षण किया जाता है तथा उन्ही कथनों को रखते हैं जो पूर्व परीक्षण से सम्बन्धित होते है। इस आन्तरिक स्थिरता की जाँच द्वारा भ्रमपूर्ण तथा असम्बद्ध कथनों को निकाल देते हैं। बहुधा 1–5 वर्ग में इसे तैयार

करते हैं। प्रत्येक कथन के लिए एक अंक दिया जाता है। तथा सभी अंको का योग एक व्यक्तिगत अंक प्रदान करता है। इसके विश्लेषण के लिए सामान्यतः दो विधियाँ अपनाते हैं–

1. प्रत्येक कथन के लिए दिये गये अंकों का प्रतिशत निकालकर। उदाहरणार्थ 80ः व्यक्ति इसके पक्ष में मत देने वाले हैं।
2. लिकर्ट की मूल विधि में प्रत्येक स्थिति के लिए एक मापन–मूल्य निश्चित करते हैं और उसी के अनुसार अंक देते हैं यथा–

कथन	सकारात्मक कथनों के लिए मापन मूल्य	नकारात्मक कथनों के लिए मापन मूल्य
पूर्णतः सहमत	5	1
सहमत	4	2
अनिश्चित	3	3
असहमत	2	4
पुर्णतः असहमत	1	5

यदि मतावली में 40 मत अथवा कथन हैं तो उससे निम्नांकित अंक मूल्य प्रकट होगें–

अधिकतम अंक 40 ग 5 त्र 200

तटस्थ अंक 40 ग 3 त्र 120

निम्नतम अंक 40 ग 1 त्र 40

किसी भी व्यक्ति के अंक 40 अथवा 200 के मध्य में होगें। 120 के ऊपर सहमति की ओर तथा नीचे अहसमति की ओर ले जाते हैं। अभिवृत्ति सदैव धनात्मक व ऋणात्मक होगी।

लिकर्ट योग निर्धारण विधि की विशेषताएँ–

1. लिकर्ट मापनी की रचना आसानी से की जा सकती है क्योंकि इसमें केवल 5 बिन्दु या 3 बिन्दु मापनी पर प्रत्युत्तर देना होता है।

2. लिकर्ट मापनी के निर्माण में समय व श्रम भी कम लगता है, इसके लिए निर्णायकों की कोई आवश्यकता नहीं होती।
3. लिकर्ट विधि में प्राप्तांक शीघ्रता से ज्ञात किये जा सकते हैं।
4. लिकर्ट विधि में कथनों का चयन श्जश मूल्य के आधार पर किया जाता है।
5. लिकर्ट विधि अधिक विश्वसनीय होती है।

लिकर्ट अभिवृत्ति मापनी की समीएँ–

1. यह कहना कठिन है कि पाँचों स्थितियों में समान अन्तर है।
2. यह कहना भी कठिन है कि सहमति अथवा असहमति सम्बन्धि कथन समान मूल्य के हैं।
3. यह सन्देहास्पद है कि समान अंक प्राप्त करने वालों की अभिवृत्ति समान रूप से धनात्मक अथवा ऋणात्मक हो।
4. कथन के प्रति व्यक्ति प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं भी कर सकता है।
5. यह क्या अनुभव करता है स्पष्ट नहीं करता। क्या करना चाहिए यह स्पष्ट करता है।

➢ **लिकर्ट 'अभिवृत्ति मापनी' के सोपान–**

(1) कथनों का संग्रह – शीर्षक से सम्बन्धित कथनों का चयन विभिन्न स्रोतों से किया जाता है। शीर्षक से सम्बन्धित ये कथन अनुकूल और प्रतिकूल होते हैं।

(2) पद विश्लेषण– शीर्षक से संम्बन्धित कथनों का चयन करने के पश्चात् उनका पद विश्लेषण किया जाता है। थर्स्टन व चैव की विधि में चतुर्थांश मूल्यों के आधार पर कथनों का चयन किया जाता है जबकि लिकर्ट योग निर्धारण विधि में पद विश्लेषण करने के बाद ही मापनी के लिए पदों का चयन किया जाता है। इसके लिए पदों के विभेदक मूल्यों को ज्ञात किया जाता है।

पदों का चयन करते समय उन्हीं पदों का चयन मापनी में किया जाता है। जिनका मूल्य अधिक होता है क्योंकि ऐसे पदों में उच्च एवं निम्न समूह में अन्तर करने की क्षमता अधिक पाई जाती है। ऐसे पद अधिक विभेदनशील होते हैं। कथनों का चयन करते समय ही मूल्यों पर अधिक ध्यान दिया जाता है।

(3) विश्वसनीयता ज्ञात करना– लिकर्ट विधि द्वारा निर्मित मापनी के अंकों की विश्वसनीयता ज्ञात करने के लिए सम अंक तथा विषम अंक वाले कथनों के मध्य सहसम्बन्ध ज्ञात कर लिया जाता है। ऐसे अभिवृत्ति मापनियों की विश्वसनीयता सामान्यतया .85 से अधिक ही प्राप्त की गई है। मर्फी व

लिकर्ट के अनुसार (1938) यह विश्वसनीयता .81 से .90 के बीच प्राप्त हुई है। यही नहीं, विश्वसनीयता की भाँति सन्तोषजनक वैधता भी प्राप्त की गई है।

➢ अभिवृत्ति का महत्व–

अभिवृत्तियों का मानव जीवन में बहुत महत्व है क्योंकि ये मानव जीवन को प्रभावित करती हैं ये ही मानव को दिशा–निर्देशित करती हैं। ये सकारात्मक और नकारात्मक रूप से दो प्रकार से दिशा–निर्देशित करती हैं। विद्यालय में शिक्षक छात्रों को अभिवृतियों के आधार पर सक्रिय बनाता है क्योंकि यदि किसी छात्र की किसी अध्यापक के प्रति सकारात्मकता अभिवृत्ति बनी होती है तो छात्र पूरा–पूरा ध्यान देकर अध्ययन करता है और अध्यापक भी छात्र पर पूरा ध्यान देता है यदि किसी छात्र की अध्यापक के प्रति नकारात्मक अभिवृत्ति होती है तो छात्र अध्यापन कार्य में पूरा–पूरा ध्यान नहीं देता है तथा शिक्षक भी अध्यापन कार्य पूर्ण ढंग से नहीं करता है। छात्रों को सुसंस्कृत अभिवृतियों के द्वारा एक सुसमृद्ध नागरिक बनाया जा सकता है अतः छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए अभिवृत्तियाँ महत्वपूर्ण होती है।

अभिवृत्तियों की सैद्धान्तिक तथा व्यावहारिक उपयोगिताएँ–

1. सामाजिक नियंत्रण में सहायक।
2. आदर्श प्रतिरूपों के निर्माण में सहायक।
3. सर्वेक्षण में सहायक।
4. पूर्व धारणा में सहायक।
5. समाज व्यवस्था बनाये रखने में सहायक।
6. व्यावहारिक उपयोगिता।

➢ अभिवृत्ति निर्माण में लिकर्ट पद्धति का चयन क्यों?–

एक व्यक्ति क्या अनुभव करता है? अथवा उसके विश्वास क्या हैं? यही उसकी अभिवृत्ति है। किन्तु किसी व्यक्ति की अनुभूति अथवा विश्वास ज्ञात करना सरल नहीं है।

अतः अनुसन्धानकर्ता को विषयी अथवा व्यक्ति द्वारा स्वयं व्यक्त की गई अनुभूतियों एवम् विश्वासों पर निर्भर रहना होता है और यह उसके मत को व्यक्त करता है। लिकर्ट पद्धति के द्वारा रचित कथनावली के माध्यम से हम किसी वस्तु विश्वास अथवा घटना के सम्बन्ध में व्यक्ति की प्रतिक्रिया के आधार पर उसके मत को ज्ञात करने का प्रयास करते

हैं। इस प्रकार लिकर्ट की योग निर्धारण मापनी की सहायता से किसी मत की अभिव्यक्ति के आधार पर व्यक्ति की अभिवृत्ति के विषय में निष्कर्ष निकालते है।

संदर्भ सूची :–

- Rivkin, S. G., Hanushek, E. A., & Kain, J. F. (2005). *Teachers, schools, and academic achievement.* Retrieved September 3, 2008, from http://www.utdallas.edu/research/tsp/pulications.htm

- Romney, P. (2003). Closing the achievement gap? 5 questions every school should ask. *Independent School*, July 2003. Retrieved April 2, 2008, from http://www.romneyassociates.com/pdf/Closing_the_Achievement_Gap.pdf

- Rowan, B., Correnti, R., & Miller, R. J. (2002). What large-scale, survey research tells us about teacher effects on student achievement: Insights from the prospects study of elementary schools. *Teachers College Record, 104,* 1525-1567. Retrieved August 14, 2008, from the ProQuest database.

- Rowan, B., Fang-Shen, C, & Miller, R. J. (1997). Using research on employees' performance to study the effects of teachers on students' achievement. *Sociology of Education, 70,* 256-284. (ERIC Document Reproduction Service No. EJ560201)

- Rudestam, K. E., & Newton, R. R. (2nd ed.). (2001). *Surviving your dissertation.* Thousand Oaks: Sage.

- Schacter, J., & Thum, Y. M. (2002). *Paying for high- and low-quality teaching.* Retrieved September 3, 2008, from Michigan State University Web site: https://www.msu.edu/~thum

- Schulte, L., Edick, N., Edwards, S., & Mackiel, D. (2005). *The development and validation of the teacher dispositions index.* Retrieved May 2, 2008, from the University of Nebraska at Omaha website: www.usca.edu/essays/vol 122004/schulte.pdf